# DR.BRR GOVERNMENT DEGREE COLLEGE,

## डॉ.बूर्गुला रामकृष्ण राव शासकीय स्नातक महाविद्यालय,

## JADCHERLA,जड्चेर्ला

MAHABUBNAGAR DIST, TELANGANAस

जिला: महबूब नगर, तेलंगाना राज्य

## Department of Hindi /हिन्दी -विभाग

# Student Study Projecton

***Charitra Sangathan ki visheshatayein***

## छात्र अध्ययन परियोजना कार्य

## चरित्र संगठन कि विशेषताएँ

## प्रस्तुति / Submittedby

| Project No. | S.No. | Roll.No. | Name of The Student | Class |
|---|---|---|---|---|
| **1.** | 1 | 20033006405511 | D.Karunakr | **B.Com 2 Year** |
| | 2 | 20033006405537 | S.Mastan | **B.Com 2 Year** |
| | 3 | 20033006405544 | U.Shilpa | **B.Com 2 Year** |
| | 4 | 20033006405546 | Waheeda | **B.Com 2 Year** |
| | 5 | 20033006468003 | Ayesha | **B.Com 2 Year** |

## Supervisor

**Dr.K.Narsimha Rao**

**Department of Hindi**

## Abstract

**"Charitra Sangathakn ki Visheshatayein"**

**चरित्र संगठन की विशेषताएँ**

(Based on Dr. Babu Gulab Rai's Essay 'Charitra-sangathan')"

This topic is the subject of the project work. Under this, the literary essay 'Charitra-sangatha (charater-building)' by famous writer Dr. Babu Gulab Rai based on this, an attempt will be made to make it clear that, today there is a great demand for literature related to personality development in the world. Literature on personality development of foreign authors is getting translated into Indian languages a lot. The reason behind this work is that it exposes the inherent interrelationship between the individual and the society. The qualities necessary to improve the life of the individual were discovered in this essay 'Character-building' by Dr. Babu Gulab Rai.

DR.BRR GOVT. DEGREE COLLEGE,

JADCHERLA

## Certificate

This is to certify that the Present Project work entitled "Charitra Sangathakn ki Visheshatayein" is the Bonafide work of 1.D.Karunakar 2.S.Mastan 3.U.Shilpa 4.Waheeda 5.Ayesha. under the Supervision of Dr.K.Narsimha Rao . Asst.Prof of Hindi. Dr.BRR.Govt.Degree College, Jadcherla. No part of this work has been submitted to any other University for the award of any Degree.

Date : 21/12/2021.

Dr.K.Narsimha Rao

Dept of Hindi

HEAD
Department of Hindi
Dr. BRR. Govt. Degree College
JADCHERLA-509 301
Dist. Mahabubnagar (T.S.)

Principal

DR.BRR GOVT. DEGREE COLLEGE,

JADCHERLA

Principal
Dr. BBR Government Degree College
Jadcherla, Dist.Mahabubnagar

# DECLARATION

We hereby declare that the investigation results incorporated in the present Study Project entitled "Charitra Sangathakn ki Visheshatayein" were originally carried out by us under the Supervision of Dr.K.Narsimha Rao . Asst.Prof of Hindi. Dr.BRR.Govt.Degree College, Jadcherla. No part of this work has been submitted to any other University for the award of any Degree.

| Project No. | S.No. | Roll.No. | Name of The Student | Class | Signature |
|---|---|---|---|---|---|
| 1. | 1 | 20033006405511 | D.Karunakr | B.Com 2 Year | Karunakar |
| | 2 | 20033006405537 | S.Mastan | B.Com 2 Year | Masbem |
| | 3 | 20033006405544 | U.Shilpa | B.Com 2 Year | Shilpa |
| | 4 | 20033006405546 | Waheeda | B.Com 2 Year | Waheeda |
| | 5 | 20033006468003 | Ayesha | B.Sc.MPCs 2 Year | Ayesha |

Date : 21/12/2021

# धन्यवाद ज्ञापन

इस छात्र अध्ययन - परियोजना कार्य को करने की प्रेरणास्रोत एवं प्रोत्साहन देने वाली आदरणीय प्राचार्या **डॉ.अप्पीय चिन्नम्मा जी** के प्रति हम श्रद्धा पूर्वक नमन करते हैं, जिनके अतुलनीय वात्सल्यपूर्ण शब्द परियोजना - कार्य करने के प्रति ऊर्जा का काम करती रही हैं। आपके आशीर्वाद एवं कृपा हम पर सदा के लिए बरसते रहें यही प्रार्थना है।

इस छात्र - परियोजना कार्य करने में सम्पूर्ण सहयोग देने वाले श्रद्देय गुरुजी **डॉ . नरसिंह राव कल्याणी जी** सहायक आचार्य , हिन्दी विभाग,को धन्यवाद प्रकट करना मात्र एक औपचारिकता है। आपके सुझाव एवं सूचनाएँ इस परियोजना कार्य को सुंदर एवं व्यवस्थित ढंग से प्रस्तुत करने में बहुत-बहुत योगदान दिये हैं। आपके प्रति हम आभार व्यक्त करते हैं।

और अंत में अपने अध्यापकों ,मित्रों एवं समस्त **डॉ.बूर्गुला रामकृष्ण राव शासकीय स्नातक महाविद्यालय, जड्चेर्ला** परिवार के प्रति हम हृदय गहनतल से धन्यवाद अर्पित करते हैं, जिनकी शुभकामनायें सदा हमारे साथ हैं।

*******

# Acknowledgement

**We are thankful to our principal Dr. Appiya Chinnamma , who stands as an inspiration behind doing this student study-project work. We owe our gratitude for her concern and necessary feedback on the prepared study projects.**

We are also thankful to our **Supervisor Dr. Narasimha Rao Kalyani Assistant Professor, Hindi Department,** who extended his full cooperation in doing this student-project work meaningfully. His unparalleled **suggestions and informative inputs have contributed a lot in presenting this project work in a beautiful and systematic manner. We express our gratitude to him.**

**Finally, we extend our heartfelt thanks to our Teashers, friends and all Dr. Burgula Ramakrishna Rao Government Degree College, Jadcherla family, whose best wishes are always with us.**

*********

# अनुक्रमणिका

* Hindi Students Study Project - Synopsis /रूपरेखा

1.भूमिका

2.डॉ.गुलाब राय का परिचय

3.व्यक्तित्व निर्माण :परिभाषा और गुण

4.चरित्र संगठन (व्यक्तित्व-निर्माण)

4.1.विनय

4.2.उदारता

4.3.लालच में न पड़ना

4.4.धैर्य

4.5. सहकारिता

4.6.सत्य बोलना और वचन का पालन करना

4.7. कर्तव्यपरायणता

6.उपसंहार

# रूपरेखा

## Hindi Students Study Project – Synopsis

**1. Title:शीर्षक:चरित्र संगठन की विशेषताएँ**(डॉ.बाबू गुलाब राय के निबंध 'चरित्र-निर्माण' के आधार पर)

**2. Statement of the Problem or Hypothesis**समस्या या परिकल्पना का विवरण:**"**चरित्र संगठन की विशेषताएँ"(डॉ.बाबू गुलाब राय के निबंध 'चरित्र-निर्माण' के आधार पर)"यह विषय परियोजना कार्य का विषय है। इसके अंतर्गत प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ.बाबू गुलाब राय के साहित्यिक निबंध 'चरित्र-निर्माण' के आधार पर आध्यन करना है।इसके आधार पर यह स्पष्ट करने का प्रयास किया जाएगा कि आज दुनिया में व्यक्तित्व–विकाससंबंधी साहित्य की मांग बहुत है। विदेशी लेखकों के व्यक्तित्व–विकाससंबंधी साहित्य का भारतीय भाषाओं मेंबहुत अनुवाद हो रहा है। इस परियोजना कार्य से यही आशय है कि यह व्यक्ति और समाज के बीच के निहित अन्तःसंबन्धों को उजागर करता है। इस परियोजना कार्य में व्यक्ति के जीवन को उन्नत बनाने के लिए आवश्यक गुणों को डॉ.बाबू गुलाब राय के निबंध 'चरित्र-निर्माण' में खोजा गया है।

**3.Aims and Objectives लक्ष्य&उद्देश्य**:इस परियोजना कार्य के लक्ष्य एवं उद्देश्य निम्न प्रकार से हैं-

1.आदर्श व्यक्तित्व का निर्माण करना है।

2.व्यक्तित्व–विकासमें डॉ.बाबू गुलाब राय का साहित्यिक योगदान को उजागर करना ।

3.व्यक्ति निर्माण ही समाज-निर्माण और देश-निर्माण का आधार है। इस विषय का विवेचन करना ।

**4. Review of Literature:** इन अध्ययनों में व्यक्ति विकास तथा सामाजिक विकास के बारे में डॉ.बाबू गुलाब राय विचारों को उल्लेख किया गया है।इस परियोजना कार्य में विशेष रूप से निबंध 'चरित्र-निर्माण'में निर्धारित व्यक्तित्व का विकास करने में सहयोग देने वाले अंशों को परियोजना कार्य हमारी जानकारी में यही पहला है।

**5. Research Methodology शोध क्रियाविधि**:-शोध के कई पर्यायवाची शब्द हैं। जैसे -अनुसंधान, अन्वेषण, गवेषण,खोज आदि। साधरणतः साहित्य में शोध और अनुसंधान शब्द ही प्रचलित हैं। किसी विषय का उसके विभिन्न पक्षोंकों तथ्यों ,तत्वों, आधारों, तर्क शीलता आदि कसौटियों पर परखना ही शोध कहलाता है। शोध के कई प्रकार हैं। जैसे - सर्वेक्षण पद्धति , आलोचनात्मक पद्धति ,समाजशास्त्रीय पद्धति, ऐतिहासिक पद्धति, समस्यात्मक पद्धति आदि।

हमने इस परियोजना कार्य के लिए समाजशास्त्रीय शोध विधि को अपनाते हुये कबीर दास के दोहों में निहित नैतिक मूल्यों को उजागर करने का प्रयास किया है।

**6. Analysis of Data**.डेटा का विश्लेषण:-प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ.बाबू गुलाब राय का साहित्यिक निबंध 'चरित्र-निर्माण' के आधार पर व्यक्तित्व-विकास का आध्यन करेने केलिए हमने विशेष रूपसे प्रथम वर्ष स्नातक तथा द्वितीय वर्ष स्नातक के पाठ्यक्रम में निर्धारित डॉ.बाबू गुलाब राय के निबंध 'चरित्र-निर्माण' तथा कबीर दास के दोहों को आधार बनाया है।चरित्र-निर्माण निबंध में उल्लेखित प्रत्येक अंश से संबन्धित इसकेलिए हमने **जडचेरला** में स्थित शाखा-ग्रंथालय,**महबूब नगर** में स्थित जिला ग्रंथालय आदि में जाकर परियोजना सामाग्री को संग्रहीत किया है। इस सामग्री को व्यवस्थित ढंग से निर्धारित परियोजना कार्य के अनुसार उपयोग किया गया है।

**7.Findigsजाँच - परिणाम:-**इस परियोजना-कार्य का यह परिणाम निकाला है कि आज दुनियां भर में व्यक्तित्व -विकास संबंधी रचनाओं तथा संगोष्ठियों का मानों होड-सा लग गया है।मगर हमारी परियोजना से यह सिद्ध होता है कि साहित्य में व्यक्तित्व -विकास की धारणा स्वतः निहित है। उत्तम नागरिक उत्तम चरित्र से ही बनाता है । इस धारणा को हम न केवल मध्यकालीन साहित्यकार कबीर दास में देखते हैं बल्कि आधुनिक काल के साहित्यकार बाबू गुलाब राय के साहित्य में भी परिलक्षित होता है।

**8. Conclusion and Suggestion निष्कर्ष और सुझाव** :- समाज की इकाई व्यक्ति है । व्यक्ति निर्माण से ही समाज का निर्माण होता है। श्रेष्ठ मनुष्यों से श्रेष्ठ समाज या राष्ट्र का निर्माण होता है।उत्तम मनुष्य बनने केलिए उत्तम

व्यक्तित्व का विकास होना परम आवश्यक है।डॉ.बाबू गुलाब राय अपने निबंधमें व्यक्तित्व पर ज़ोर देते हैं  कहने का मतलब यही है कि समाज में सद्‌गुणों का,सदाचार का आचरण होता रहे।

इस परियोजना कार्य से छात्र-छात्राओं में नैतिक मूल्यों के प्रति सजगता आती है। नैतिक मूल्यों का  पालन करने के लिए छात्र-छात्राओं में प्रोत्साहित करना चाहिए। इस कार्य को  महत्वपूर्ण के रूप में स्वीकार करके उत्तम नागरिकों को बनाने की  सतत जरूरी है।

*******

**छात्र अध्ययन परियोजना कार्य- 2021-22**

# चरित्र संगठन की विशेषताएँ

**(डॉ.बाबू गुलाब राय के साहित्यिक निबंध 'चरित्र संगठन'के आधार पर)**

**1.भूमिका:चरित्र संगठन की विशेषताएँ**(डॉक्टर गुलाब राय के साहित्यिक निबंध **"चरित्र संगठन"** के आधार पर) हमारी परियोजना कार्य का विषय है । इसके अंतर्गत हमने डॉ.बाबू गुलाब राय का प्रमुख साहित्यिक निबंध 'चरित्र संगठन' में उल्लेखित अंशों के आधार पर 'व्यक्तित्व -निर्माण' के सूत्रों खोजने का प्रयास किया गया है।

इस परियोजनाकार्य में हम सबसे पहले डॉ.बाबू गुलाब राय का संक्षिप्त में परिचय देखेंगे । उसके बाद व्यक्तित्व निर्माण की परिभाषा और उसमें निहित गुणों की चर्चा व विवेचन करेंगे ।

**2.डॉ.गुलाब राय का परिचय:** डॉ.गुलाब राय का जन्म सन् 1888में इटावा में हुआ। उन्होंने दर्शन शास्त्र में एम.ए. तथा एल.एल.बी . तक की पढ़ाई की। आगरा विश्वविद्यालय से उन्हें डी.लिट. की मानक उपाधि मिली। सन1963 में उनकी मृत्यु हुई।

बाबू गुलाब राय एक आदर्श अध्यापक, संपादक,विचारक , समीक्षक, एवं साहित्यकार थे।उन्होंने साहित्य ,धर्म, दर्शन, मनोविज्ञान, तर्कशास्त्र ,नीति शास्त्र आदि विषयों पर रचनाएँ की ।बाबू गुलाब राय को निबंध लेखन से ख्याति मिली है। मेरे निबन्ध, फिर निराश क्यों? मेरी असफलताएँ, मैत्री धर्म, सांस्कृतिक जीवन , मन की बात आदिउनके प्रसिद्ध निबंध संग्रह हैं.

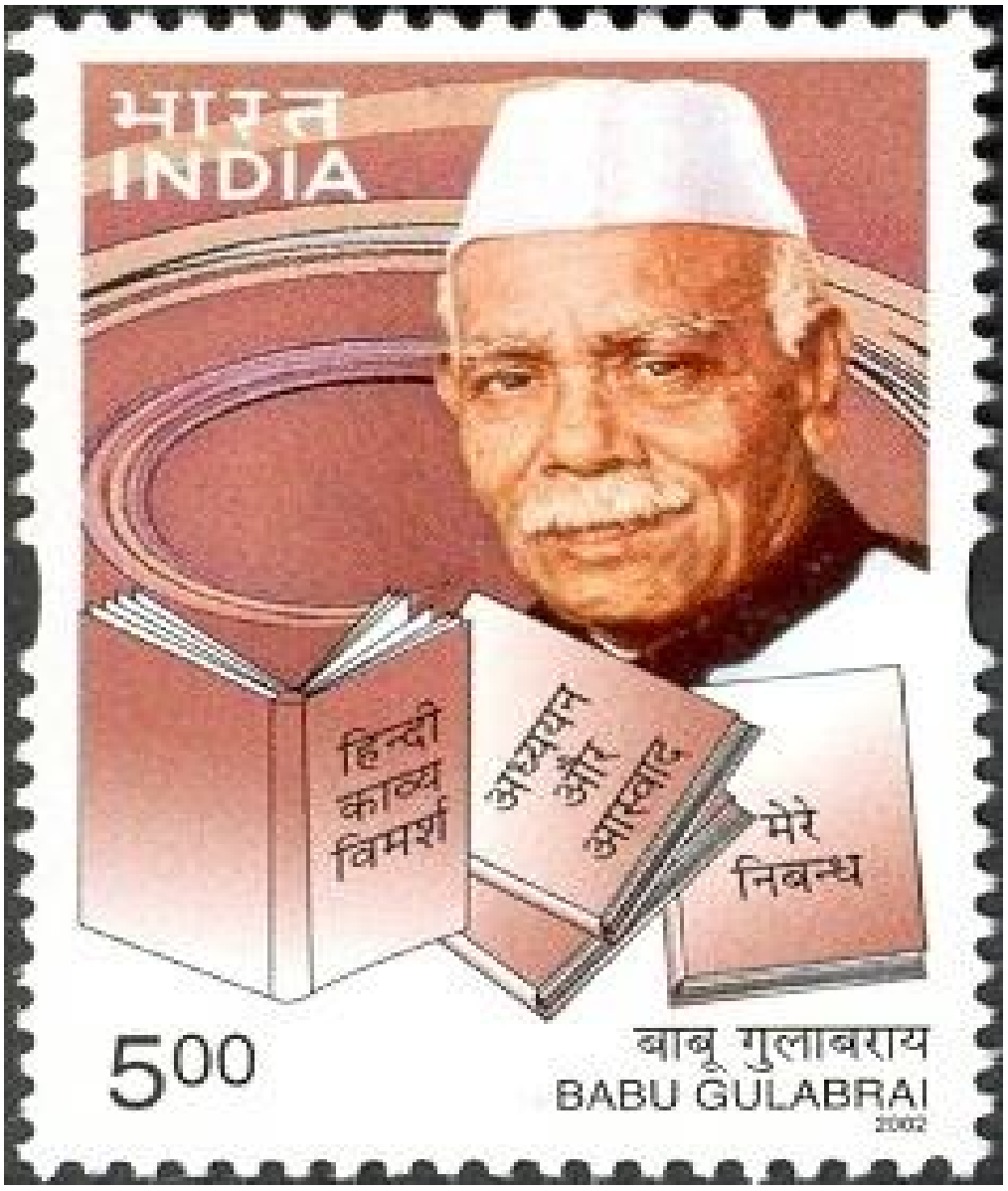
भारत
INDIA
हिन्दी काव्य विमर्श
अध्ययन और आस्वाद
मेरे निबन्ध
500
बाबू गुलाबराय
BABU GULABRAI
2002

I

**3 .चरित्र (व्यक्तित्व)विकास :परिभाषा और गुण** :व्यक्तित्वया चरित्र का मतलब है एक मनुष्य की सोच, उसके द्वारा की जाने वाली गतिविधियां, उसकी आदतें और उसका स्वभाव। इन सब को मिलाकर जो बनता है उसे चरित्र कहते है.

मनुष्य की विशेषता उसके व्यक्तित्व / चरित्र में होता है। मनुष्य का आदर उसके पद,धन तथा विचार के कारण भी होता है, परंतु ये स्थायी नहीं।केवल चरित्र ही मनुष्य को स्थायी आदरणीय बनाता है।

दृढ़ चरित्र बल का अभाव राष्ट्र को पतन की ओर अग्रसर कर देता है। चरित्र बल मनुष्य की सबसे बड़ी शक्ति है। चरित्र निर्माण की प्रक्रिया जन्म से लेकर मृत्यु तक चलती रहती है। आत्मशक्ति के विकास, सम्मान एवं वैभव का सोपान चरित्र बल है।

डॉ.बाबू गुलाब राय का मानना है कि - मनुष्य का मूल उसके व्यक्तित्व /चरित्र में है। व्यक्तित्व /चरित्र में ही उसका आत्मबल का प्रकाश होता है। व्यक्तित्व /चरित्र उन गुणों का समूह है, जो हमारे व्यवहार से संबंध रखते हैं। **विनय, उदारता, लालच में न पड़ना, धैर्य, सहकारिता, सत्य बोलना और वचन का पालन करना और कर्तव्यपरायणता** ये सब गुण व्यक्तित्व (चरित्र) में आते हैं

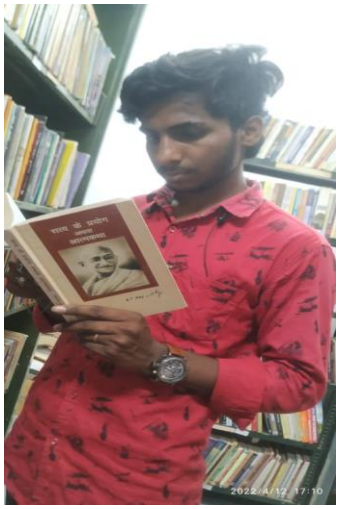

**4.चरित्र संगठन (व्यक्तित्व-विकास ) :** अब हम डॉ .बाबू गुलाब राय द्वारा चरित्र (व्यक्तित्व) के लिए निर्देशित अंशोंकोंविस्तार से इस परियोजना कार्य में देखेंगे। यही इसका मुख्य उद्धेश्य है।

**4.1.विनय :-** नम्रतापूर्वक की जाने वाली प्रार्थना या विनतीको विनय कहा जाता है। शिष्टता, भद्रता,अनुशासन,सम्यक आचरणइसके अंग कहे जाते हैं। विनय के साथ निरभिमान ,मधुर भाषण , मनुष्य के प्रति आदर ,सहनशीलता आदि गुण भी जुड़े होते हैं। विनय गुण चरित्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

इंसान को ऐसी भाषा बोलनी चाहिए जो सुनने वाले के मन को बहुत अच्छी लगे। ऐसी भाषा दूसरे लोगों को तो सुख पहुँचाती ही है, इसके साथ खुद को भी बड़े आनंद का अनुभव होता है।

**4.2.उदारता:-** उदारता का साधारण अर्थ हैदयालुता, दानशीलता, दरियादिल, विशालहृदयताआदि। उदार पुरुष सदा दूसरों के विचारों का आदर करता है और समाज में सेवक भाव से रहता है।वह दूसरों के गलतियों को क्षमा कर देता है और हमेशा परोपकार करने के लिए तत्पर रहता है।

इसी तरह अगर आप किसी का भला नहीं कर पा रहे तो ऐसे बड़े होने से भी कोई फायदा नहींहैं।

**4.3.लालच में न पड़ना:-**लालच के पर्यायवाची शब्द हैं- लोभ, लिप्सा, लोलुपता,तृष्णा , प्रलोभन, लालसाआदि।कोई पदार्थ, विशेषतः धन आदि प्राप्त करने की इतनी अधिक और ऐसी कामना जो कुछ भद्दी और बेढंगी हो उसे लालच कहा जाता है। कोई चीज पाने की बहुत बुरी तरह इच्छा करना भी लालच ही है। चरित्रवान व्यक्ति का यही कर्तव्य होता है कि वह हमेशा लालच से दूर रहे। जो लोग लालच से बच सकते हैं, अपनी इच्छाओं को रोक सकते हैं, वे ही शक्ति सम्पन्न और प्रभावशाली बनने में समर्थ होते हैं।

आशय यह है कि लालच और मोह से हमारे जीवन की क्षति होती है, हमारे सम्मान का ह्रास होता है तथा ईश्वर की श्रद्धा (विश्वास/आस्था)की एकमात्र बूँद से हमारे लालच व मोह की सम्पूर्ण प्यास बुझ जाती है

**4.4.धैर्य:-** कठिनाइयों में चित्त को स्थिर रखना धैर्य कहलाता है। धैर्य मनुष्य के व्यक्तित्व को ऊंचा उठाने का एक उत्तम गुण है। धैर्यवान व्यक्ति विपत्ति आने पर भी अपना मानसिक संतुलन बनाए रखता है और शांतचित्त होकर इस पर नियंत्रण करते हुए दुख से बचने का सरल मार्ग खोज लेता है। कठिनाइयों में दुखित न होना ही उन पर विजय पाना है।

जब व्यक्ति का समय बुरा होता है, तब अक्सर वह व्याकुल हो जाता है। कठिन परिस्थितियों में मन को समझाना मनुष्य के लिए कठिन हो जाता है।**मनुष्य में धैर्य का होना बहुत** आवश्यक है। धैर्य के ना होने पर बाजी में किया गया कार्य अधूरा और त्रुटि पूर्ण होता है।जिसके परिणाम स्वरूप उचित फल की प्राप्ति नहीं होती। यही बताते हुए इस दोहे में उन्होंने कहा है कि हाथी बिना किसी जल्दबाजी के, धैर्य पूर्वक धीरे-धीरे मन भर कर अपनी पूरी क्षुधा समाप्त करता है। ऐसा करने से वह भोजन पश्चात पूर्णतः तृप्त रहता है।

वहीं दूसरी तरफ कुत्ता अधिक भोजन की तलाश में इधर-उधर भागता रहता है धैर्य हीन होकर एक घर से दूसरे घर की ओर जाता है, किंतु अंत में उसे तृप्ति नहीं मिलती।

एक और दोहा हमें यह सीख देता है कि हमें अधिक जल्दबाजी में किसी कार्य को संपन्न करने के बारे में नहीं सोचना चाहिए। जो कार्य धीरज के साथ किया जाता है वह तृप्ति एवं संतोष देता है।

**6.5. सहकारिता :-**परस्पर एक दूसरे का सहयोग करते हुये काम करना ही सहकारिता है। सहकारिता में समाज के गरीब एवं कमजोर व्यक्ति का हित भी निहित होता है। सहकारिता का मूलमंत्र है- "एक सब के लिए, सब एक के लिए" और सबके हित में ही हमारा हित है.

स्वार्थी लोग केवल सुख के साथी होते हैं, दुःख आने पर वे भाग खड़े होते हैं। वृक्ष, संत जन एवं चौथा मेह का बरसना – ये चारों परोपकार के लिए ही प्रकट हैं ।

**4.6.सत्य बोलना और वचन का पालन करना :**कठिन वचन (कठोर/कर्कश) वचन नहीं बोलना चाहिए। पराई निंदा (बुराई) तथा झूठ, इन दोनों का भी सर्वथा त्याग कर देना चाहिए। सत्य वचन, हित-मित-प्रिय वचन को ही बोलना चाहिए क्योंकि जग में भी सत्यबोलने वाले ही सुखी दिखाई देते हैं। सत्य मनसा-वाचा-कर्मणा होना चाहिए।

कबीर दास जी कहते हैं कि कड़वे बोल बोलना सबसे बुरा काम है, कड़वे बोल से किसी बात का समाधान नहीं होता। वहीँ सज्जन विचार और बोल अमृत के समान हैं।

**4.7. कर्तव्यपरायणता:-** कर्तव्यपरायणता का सीधा-सादा अर्थ यही है कि जो बातें बचने की हैं उनसे बचना चाहिए और जो करने की हैं, उनको सौ हानि उठाकर भी करना चाहिए

मानव जीवन अत्यंत ही दुर्लभ है। यह मानव जीवन बार बार प्राप्त नहीं होता है. जैसे फल एक बार पेड़ से टूट कर गिर जाता है, वह दुबारा डाल से मिल नहीं पाता है। पेड़ से एक बार फल टूट कर गिरने पर वह शाखा से पुनः नहीं मिल पाता है, शाखा से दुबारा नहीं लग पाता है, ऐसे ही यदि मानव जीवन एक बार हाथ से निकल गया तो पुनः इसको प्राप्त नहीं किया जा सकता है। भाव है की मानव जीवन अत्यंत ही दुर्लभ और कीमती होता है। इसे व्यर्थ हीधन दौलत को जुटाने में व्यतीत कर देना मूर्खता है क्योंकि यह पुनः प्राप्त नहीं किया जा सकता है..

**रात गंवाई सोय कर, दिवस गंवायो खाय ।**
**हीरा जनम अमोल था, कौड़ी बदले जाय ॥**

*****

**काल करे सो आज कर , आज करे सो अब ।**

**पल में प्रलय हो एगी , बहुरि करेगा कब ।।**

**6.उपसंहार:**इस प्रकार इस परियोजना कार्य के माध्यम से हमें यह ज्ञात होता है कि मनुष्य के लिए चरित्र सब से महत्वपूर्ण है। बिना सुचरित्र के मनुष्य जन्म व्यर्थ है। इसी बात को डॉ.बाबू गुलाब राय ने अपने साहित्यिक निबंध में बताया है ।

******

## संदर्भ ग्रंथ सूची


1.प्रथम वर्ष डिग्री हिन्दी पुस्तक

2.डॉ.गुलाब राय जीवन परिचय -इंटरनेट से

3.हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास

4.प्रकार प्रभाकर (निबंध संग्रह -बाबू गुलाब राय)

B.A., B.Sc., B.Com., B.B.A.
II Year
Second Language
Hindi
काव्य निधि
&
हिन्दी साहित्य का इतिहास
B.A., B.Sc., B.Com., B.B.A.
First year
Second Language
Hindi
गद्य दर्पण
&
कथा सिंधु


डॉ.बी.आर.अंबेडकर सार्वत्रिक विश्वविद्यालय
BA3(H)3
हिन्द्री भाषा और
साहित्य का इतिहास
मध्य काल
आदि काल
हिन्दी साहित्य
आधुनिक काल
हिन्दी भाषा
उपन्यास
कहानी
नाटक
एकांकी